Conclusion

उपसंहार

समग्र शोध प्रबंध का मूल्यांकन तथा उपसंहार

उपसंहार

समग्र शोध प्रबंध का मूल्यांकन तथा उपसंहार

हिन्दी कवि सम्मेलनों का प्रारंभिक स्वरूप विकासक्रम वाचन एवम् गायन की विविध शैलियों हिन्दी के मंचीय काव्य तथा विभिन्न अंचलों में संयोजित कवि सम्मेलन के स्वरूप मंचीय हिन्दी काव्य की भाव सम्पदा तता मंचीय कवियों के व्यक्तित्व तथा विशिष्ट प्रदान आदि विषयों का प्रस्तुत शोध प्रबंध में उल्लेख किया जा चुका है इसमें यह स्पष्ट है कि माँ सरस्वती की सेवा में इन हिन्दी मंचीय कवियों ने खूब सराहनीय कार्य किया है तथा उनका साहित्यिक योगदान अत्यन्त महत्पूर्ण रहा है। काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त इन मंचीय कवियों ने कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि अन्य विधाओं से संबंधित साहित्य का सृजन भी किया है। मंचीय कवि के परिचय में प्रकाशित एवम् अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची इसका प्रमाण है। प्रकाशित होगा तब हिन्दी साहित्य भंडार में और वृद्धि करेगा। इससे करोई बेयत नहीं। पुस्तकें तथा रचनाएं विविध राज्यों के विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में सम्मिलित भी हुई हैं।

आज की परिस्थितियों के परिवर्तन की बहुत तेज हो गई है। देश के औद्योगिक विकास ने हमारे सामाजिक और राजनैतिक दोनों जीवन को बुरी तरह से झकझोर कर रख दिया है। समाज का सुविधाभोगी वर्ग जिसका अर्थात राजनीति दोनों पर एकाधिकार है। मानिए मात्र कि शक्ति का उपयोग अपने इस एकाधिकार को दृढ़तर बनाने के लिए करता रहता है। इस परिस्थिति ने हमारे साहित्य एवं साहित्यकारों को भी काफी प्रभावित किया है। आज का साहित्यकार इन विषम परिस्थितियों का शिकार बनता जा रहा है।

इसी प्रकार हमारे कवि सम्मेलनों में भी गिरावट आती जा रही है।

यहाँ कुछ मुद्दों पर विचार आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं।

- हिन्दी कवि सम्मेलन में जो गिरावट आती गई उनके लिए जवाबदार कुछ असाहित्यिक कवि।
- हिन्दी साहित्य के कवि और मंचीय कवि की तुलना अनावश्यक
- हिन्दी कवि संमेलनों में साहित्यिक गिरावट के प्रमुख कारण
- हिन्दी कवि संमेलन में साहित्यिक स्तर में सुधार के उपाय
- साहित्यिक प्रतिभा सम्पन्न जीवित मंचीय कवि

उपर्युक्त विषयों पर भी मैंने कुछ विचार किया है। ऐसा भी हो सकता है कि मेरे इन विचारों से ज्यादातर लोग असमहमत हों परन्तु सैंकड़ों मंचीय कवियों से साक्षात्कार तथा पत्र व्यवहार तथा जो जनमेदनी इन कवियों को सुनने के लिए एकत्रित होती है इन सभी चीजों के अनुभव ने मुझे ये लिखने पर विवश किया है। कवि सम्मेलन तथा मंचीय कवियों की वर्तमान स्थिति बताना मेरे लिए बेहद जरूरी था। इसके बिना मेरा शोधकार्य अधूरा रहता।

हिन्दी के जो भी कवि सम्मेलन होते हैं। उसमें धीरे-धीरे साहित्यिक गिरावट की मात्रा बढ़ती जा रहीहै। कई ख्याति प्राप्त कवि मंच पर अधिकाधिक गंदगी चुटकुटेबाजी तथा अन्य साहित्यिक विधियों आश्रय दे रहे हैं। ऐसे लोगों के मंच की गरिमा खंडित होती। ऐसे कवि और ऐसे तत्वों पर रोक होनी चाहिए।

मंचीय और गैर मंचीय कवियों के बीच एक अघोषित लकीर हमेशा से रही है कभी-कभी यह लकीर जरूर थोड़ी गहरी हो जाती है। जिसमें इस भेद को बाहर का समाज भी समझने लगता है। मंचीय और गैर मंचीय लोगों के बीच होने वाले इस भेद भाव की कीमत ही आज कानपुर के प्रमोद तिवारी और दिल्ली के विनय विश्वास जैसे कवि चुका रहे हैं। वरना इनकी कविताओं पर भी अकादमिक चर्चा हो सकती थी। विश्वास बताते हैं, मंचीय और गैर मंचयी या साहित्यिक और गैर साहित्यिक जैसे लकीर का कोई अर्थ नहीं है। मंच की कविता साहित्यिक पत्रिकाओं में सराही जा सकती है। साहित्यिक पत्रिकाओं में छपने वाले कवियों की कविताएं मंच से राजेश जोशी, हेमंत कुकरेती, बद्रनारायण की पंक्तियों को समय-समय पर अपनी प्रस्तुति में जोड़ते हैं। खास बात यह कि साहित्यिक कवि माने जाने वाले राजेश जोशी, बद्रीनारायण की कविताओं को मंच पर उद्धृत करने पर श्रोताओं की तरफ से कई-कई बार एक बार फिर (वन्स मोर) का

आग्रह भी आया। यदि साहित्यिक पत्रिकाओं के पास अरुण कमल, राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, केदारनाथ सिंह, इब्बार रब्बी जैसे कवि हैं तो कविता के दूसरे पलड़े अर्थात मंच पर भी गोपाल दास, नीरज, सोमठाकुर, बाल कवि बैरागी, उदय प्रताप सिंह, सुरेन्द्र शर्मा, अशोक चक्रधर जैसे हस्ताक्षर मौजूद हैं। अब मंच और साहित्यिक कविता के दो पलड़ों में कौन-सा पलड़ा भारी है, यह कहना मंचीय कविता को कम करके आंकने वालों के लिए भी मुश्किल होगा।

वरिष्ठ हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा कहते हैं, मंच का कवि होना, पत्रिकाओं में कविता लिखने से अधिक चुनौतिपूर्ण हैं। चूंकि साहित्य की कविता का पाठक एक खास तरह का पाठक वर्ग होता है। मंच की कविता सुनने वालों में कुली से लेकर कलेक्टर तक मौजूद होते हैं। अब आपको कुछ ऐसा सुनाना है, जो दोनों के समझ में आए और दोनों उसकी सराहना किए बिना ना रह पाएं।

मंच पर कवि अपनी रचना के साथ श्रोताओं के सामने होता है। इस तरह श्रोता कवि के सामने अपनी नाराजगी या खुशी प्रकट कर देता है। कविता पर तालियाँ की गड़गड़ाहट सामने अपनी नाराजगी या खुशी प्रक्ट कर देता है। कविता पर तालियों की गड़गड़ाहट होती है या फिर कवि हूट होते हैं। जो भी अंजाम होना है, सरेआम होता है। यह मंचीय कविता का ही जादू है, जो श्रोता पने प्रिय कवि को सुनने के लिए पूरी-पूरी रात कवि सम्मेलनों में बैठा रह जाता है। गोपालदास नीरज के लिए मशहूर है कि उनकी महफिल में जो बैठ गयै, कार्यक्रम खत्म हो तक वह उठकर नही जा पाया। दूसरी तरफ साहित्यिक कविता के पाठकों के पास पसोर दिया, उसे पढ़ना पड़ता है।

बात मंचके जादू की करें तो जनवरी महीने में होने वाले गणतंत्र दिवस लाल किले के कवि सम्मेलन में रात दस से सुबह तीन चार बजे तक ठिठुरती ठंड में भी कविता सुनने के लिए हजारों की संख्या में श्रोता बैठे होते हैं। क्या शालीतना के साथ चलने वाला कोई दूसरा आयोजन है, जो इतनी बड़ी संख्या में लोगों को अपने साथ कड़ाके की ठंड में पूरी रात बाँध कर रखे।

हिन्दी साहित्य की कविता और मंचीय कवियों की तुलना अनावश्यक है। आज के वर्तमान समय में इस प्रकार के मंचीय कवि सम्मेलन ही हिन्दी कविता को जीवित रखते हैं और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए यह बेहद उपयोगी सिद्ध होते हैं। साहित्यिक कविताएँ लोगों को उतना प्रभावित नहीं करती, जितना ये मंचीय कविताएँ करती हैं। कई प्रतिभाशाली नए कवियों को यहँ अपना नाम कमाने का मौका इसी मंच से प्राप्त होता है। जो ऐसेसार्वजनिक कवि सम्मेलन हिन्दी-कवियों की नए युवा कवियों की आश्रयदाता है। लोगों का मनोरंजन तो होता ही है साथ में वे हिन्दी से जुड़ते हैं। हिन्दी को बड़ा लोकसमुदाय मिलता है।

हिन्दी कवि सम्मेलनों के साहित्यिक स्तर में गिरावट के कारण :

स्वतंत्रता पूर्व मंचीय कवि सोदेश्य तथा साहित्यिक काव्य पाठ के पक्षधर थे किन्तु ज्यों-

ज्यों समय बीतता गया मंचीय हिन्दी कविताओं के साहित्यिक स्तर में भी गिरावट आती गई। मैंने नीचे कुछ कारण दिये हैं।

1) शराबखोरी

2) गुटबाजी

3) व्यावसायिकता

4) दुश्चरित्रता

5) मार्गदर्शन का अभाव

6) साहित्यिकता का अभाव

7) तथाकथित कवियित्रियाँ

हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक स्तर में सुधार के उपाय :

1) ऐसे कवि जो ऐसे साहित्यिक माहौल को अपने गंदे चुटकुले, गुटबाजी, शराब और दुश्चरित्र से प्रभावित करते हैं उन्हें इन सम्मेलनों में न बुलाया जाये।

2) आगंतुक कवियों में से जो कवि ऐसे कुछ अश्लील, असमाजिक को पेश करती हुई रचनाएँ सुनाएं वो उनपर तुरंत ही कार्यवाही की जानी चाहिए।

3) आनेवाले सभी कवियों की रचनाओं को किसी वरिष्ठ कवि से एक बार बढ़कर जाँच लिया जाए कि ये योग्य हैं या नहीं।

4) केवल उन्हीं कवियों को आमंत्रित किया जाये तो अव्यवसायी तथा साहित्यिक प्रतिभा सम्पन्न हों इससे जो मात्र आर्थिक लाभ को देखकर ज्यादा पारिश्रमिक माँगते हैं वे स्वतः ही ना आए। जिनका उद्देश्य केवल कवि बनना हो उसे ही बुलाया जाए।

5) उन्हीं कवियित्रियों को बुलाया जाए जिनकी वेशभूषा, हावभाव तथा व्यवहार शाली हो।

इस शोधकार्य के दौरान मैं जिन राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवियों से मिला उनकी सूची निम्नलिखित है। इनमें कई मंचीय कवियों का भी नाम है –

श्री गोपालदास नीरज, विष्णु विराट, पं. विश्वेश्वर शर्मा, प्रदीप चौबे, विष्णु सक्सेना, सुरेन्द्र दुबे, योगेन्द्र मुद्गल, डॉ. माणिक मृगेश, बंकट बिहारी 'पागल', ब्रज किशोर पटेल, विद्या प्रकाश ज्ञानदीप, नन्द किशोर सोनी, सैयद अली नदीम आदि।

अंत में यह कहा जा सकता है कि हिन्दी के मंचीय कवियों में संवेदना के स्तर पर लोकरुचि के अनुरूप विषय को प्रस्तुत करके जन ख्याति अजित की है जिसमें मुक्तक, रुबाइयाँ, सवैया, चतुष्पदी, दोहे, गीत, गज़ल, नवगीत, छन्द आदि तमाम काव्य विधाओं का प्रयोग किया है। हालांकि समयांतर पर हर विधा में कुछ न कुछ परिवर्तन आता ही रहा है जो मैंने अपने शोध प्रबंध में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।